॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री शिव जी की आरती

श्री शिवानंद स्वामी (अंतिम पद में नाम)

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा॥

एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।
हंसासन गरुड़ासन, वृषवाहन साजे॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

दो भुज चार चतुर्भुज, दसभुज अति सोहे।
त्रिगुण रूप निरखते, त्रिभुवन जन मोहे॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

अक्षमाला वनमाला, मुंडमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी, कर माला धारी॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

श्वेतांबर पीतांबर, बाघंबर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक, भूतादिक संगे॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

कर के मध्य कमंडलु, चक्र त्रिशूलधारी।
सुखकारी दुखहारी, जगपालन कारी॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित, ये तीनों एका॥
॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

त्रिगुणस्वामी जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख संपत्ति पावे॥

॥ ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

॥ बोलो भगवान शिव की जय ॥